शक्ति

सृष्टि के आरंभ में, केवल परमात्मा के शुद्ध चेतना और शुद्ध शक्ति ही अस्तित्व में थी। शुद्ध शक्ति निर्गुण (गुणों से परे) की स्थिति में रहती है। यह निरंतर बहती रहती है और अनुभव प्राप्त करके स्वयं के बारे में जानती है। इस सृष्टि में सब कुछ शक्ति या ऊर्जा का ही रूप है। इसलिए, समझें कि ऊर्जा हमेशा एक ही स्थिति में नहीं रहती। प्रत्येक स्थिति अस्थायी है। उदाहरण के लिए, जैसे लैंडलाइन फोन ने मोबाइल फोन को जन्म दिया, वैसे ही ऊर्जा भी निरंतर विकसित होती रहती है और बढ़ती रहती है, कभी भी एक ही स्थिति में नहीं रहती।

ऊर्जा निरंतर विकसित होना और बढ़ना चाहती है। लेकिन जब हम इसे दबाने की कोशिश करते हैं और इसे अंदर बढ़ने नहीं देते हैं, तो यह अटक जाती है। फिर, यह किसी न किसी रूप में बाहर निकलने का रास्ता ढूंढती है - दुख, दर्द, घाव, परेशानियों, या बीमारियों के माध्यम से। हमारे अंदर की पुरानी ऊर्जा इन रूपों में बाहर निकलती है। इस बात से अनजान, हम इनके खिलाफ लड़ते हैं। इसलिए, हमें ऊर्जा को निरंतर बहते और बढ़ते रहने में मदद करनी चाहिए।

हम ऊर्जा को नहीं बना सकते हैं और न ही नष्ट कर सकते हैं, लेकिन हम इसे एक रूप से दूसरे रूप में बदल सकते हैं। इसलिए, हम किसी भी ऊर्जा को मार नहीं सकते हैं। इसका मतलब है, हम कामवासना, क्रोध, लालच, मोह, अभिमान, आश्चर्य, क्रोध, दर्द, भय, पीड़ा, करुणा, स्वार्थ, निस्वार्थ, स्वास्थ्य और रोग जैसी ऊर्जाओं को मार नहीं सकते हैं। हम केवल उनके रूप को बदल सकते हैं। इसलिए, यदि आप सोचते हैं कि दर्द निवारक आपके दर्द को मार देंगे, तो आप गलत हैं, क्योंकि यह आपको किसी अन्य नकारात्मक रूप में वापस आ जाएगा, जैसे कि पीड़ा या कोई अन्य बीमारी, या कई छोटे-छोटे दर्द मिलकर एक बड़ा कैंसर बन सकता है।

जब हम सकारात्मक इच्छा का चयन करते हैं और नकारात्मक ऊर्जा के साथ संघर्ष करते हैं, तो हमारी इच्छा से जुड़ी सारी ऊर्जा नकारात्मक विचारों की गिरफ्त में आ जाती हैं, जिससे वे

अधिक शक्तिशाली होते हैं और हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने से रोकते हैं। इसलिए, अंत में, नकारात्मक जीत जाता है, जिसका अर्थ है कि हर कोई अंततः बीमारियों या समस्याओं के कारण मर जाता है। यहां समझने के लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि, समस्या नकारात्मक में नहीं है, बल्कि इसे एक बुरी शक्ति के रूप में देखने और इसके खिलाफ लड़ने की हमारी कोशिश में है। यह दृष्टिकोण हमें कभी भी शांतिपूर्ण अवस्था प्राप्त करने से रोकता है, क्योंकि हमेशा अपने भीतर जो हमें पसंद नहीं है उसके खिलाफ लड़ने से, भय और चिंता पैदा होती है। भले ही हम जीत जाएं, दुश्मन के छुपे होने का भय बना रहता है, जो हमें शांति से वंचित करता है।

तो, शांतिपूर्वक जीने का शाश्वत समाधान, आपको यह समझना होगा कि, समस्याएं या नकारात्मकता आपको नष्ट करने के लिए नहीं बनाई गई हैं, बल्कि आपकी मदद करने के लिए, आपके भीतर नई क्षमताओं को जगाने के लिए, और आपके विकास में सहायता करने के लिए हैं। सोचें कि आप अपना जीवन बना रहे हैं, इसकी पूरी जिम्मेदारी लें, ऊर्जा की प्रकृति को समझें और इसके साथ सहयोग करें। केवल तभी यह आपकी मदद करेगी। यदि आप खुद को पीड़ित मानते हैं, यह मानते हुए कि दूसरे आपकी समस्याओं का कारण हैं, ऊर्जा आपकी मदद नहीं करेगी। इसलिए, नकारात्मक ऊर्जा को जैसी है वैसी ही स्वीकार करें और समझें कि यह भी आपकी इच्छाओं को पूरा करने में मदद करेगी।

इस सृष्टि में, हमेशा ऐसे लोग होंगे जो आपसे निम्न और उच्च होंगे। इसलिए, जो लोग आपके से निम्न हैं उन्हें क्षमा करें, उनका सम्मान करें, और उन्हें समझें, उन्हें अपना प्यार दें और यदि संभव हो तो उनकी वृद्धि में मदद करें। इसी तरह, जो लोग आपसे उच्च हैं उन्हें पूजें और उनकी आराधना करें, उन्हें अपने आदर्श मानें और उनके स्तर तक पहुंचने का प्रयास करें। अर्थात, जो लोग आपके से निम्न हैं उन पर विजय पाने और उन्हें दबाने की आदत छोड़ दें, क्योंकि यह संभावना है कि वे आपसे उच्च बन सकते हैं। साथ ही, जो लोग आपसे उच्च हैं उन पर विजय पाने का प्रयास बंद कर दें, क्योंकि उनके हाथों अवश्य आपको हार का सामना करना पड़ेगा।

अगर आप दूध में जहर मिलाते हैं, तो पूरा दूध जहरीला हो जाता है, या अगर आप दूध में दही मिलाते हैं, तो यह दही में बदल जाता है। इसी तरह, अगर आप क्रोध को बुरा मानते हैं और इसके प्रति नफरत का भाव रखते हैं, तो यह गुस्से में बदल जाता है, जैसे कि आग में तेल डालना। या अगर आप क्रोध को दिव्य मानते हैं और इसके प्रति प्रेम का भाव रखते हैं, इसे प्रेम से देखते हैं, तो यह प्रेम में बदल जाता है। इसलिए, केवल जब आप सभी अच्छी और बुरी ऊर्जाओं को प्रेम से देखते हैं और उन्हें दिव्य ऊर्जाओं में बदलने में मदद करते हैं, तभी आप नई ऊर्जा अवधारणा को लागू कर रहे हैं, अन्यथा आप इसका पालन नहीं कर रहे हैं।

इसलिए, अगर क्रोध या अन्य नकारात्मक ऊर्जाएं अधिक हैं, तो निराश या बेचैन न हों। यह अधिक रहना, यह दर्शाता है कि आपके पास बहुत सारी ऊर्जा है। तो, नकारात्मक ऊर्जाएं होने से खुश रहें। हालांकि, उनका उपयोग बुद्धिमानी से करें, उनका दुरुपयोग न करें। आग का उपयोग एक घर को जलाने के लिए या दीपकों से घर को रोशन करने के लिए किया जा सकता है।

यहां समझने की आवश्यकता है कि हर ऊर्जा तटस्थ और मासूम है। यह आपको यह नहीं बताती है कि इसका उपयोग कैसे करें, आपको तय करना होगा। सभी प्रकार की ऊर्जा, भोजन सहित, मदद और नुकसान करने की क्षमता रखती हैं। यदि आप कुछ को दुश्मन मानते हैं, तो यह आपको नुकसान पहुंचाएगा, यदि आप इसे मित्र मानते हैं, तो यह आपकी मदद करेगी। इसलिए, सभी अच्छे और बुरे गुणों, रूपों, संबंध, स्वास्थ्य और बीमारियों को एक आनंदमय स्वस्थ अवस्था या आनंदमय संबंध अवस्था या किसी अन्य अवस्था की ओर मार्गदर्शन करें। यदि आप उन्हें सही रास्ता नहीं दिखाते हैं, तो वे आपको आपके पुराने विचारों की ओर ले जाएंगे।

इसी तरह, अगर आप दवाएं लेने का निर्णय लेते हैं, तो उन्हें प्रेम से लें और सुझाव दें कि वे आपको आनंदमय स्वास्थ्य की ओर ले जाएं। वे भी बुराई के प्रति प्रेम पैदा करके आपके

विकास में मदद करेंगे। इसलिए, अपने भीतर सभी विचारों, गुणों, रूपों, संबंध, स्वास्थ्य और बीमारियों को प्रेम से देखें और सुझाव दें कि वे आपको शाश्वत आनंदमय परिणाम दें।

हाल ही में, मेरे मुंह में सभी मसूड़े सूज गए और खून बहने लगा। फिर, मैंने उन अस्वस्थ विशेषताओं को आनंदमय स्वास्थ्य की ओर मार्गदर्शन किया। सात दिनों तक, मैंने अपने शरीर में सभी लक्षणों को प्रेम और स्नेह से अनुभव किया। उसके बाद, मेरे मसूड़े स्वस्थ अवस्था में वापस आ गए। मैंने अन्य चीजों में व्यस्त नहीं हुआ, मैंने समस्या से भागने की कोशिश नहीं की, बल्कि समस्या के साथ रहकर उसे प्रेम देनेसे, मुझे परिणाम मिला।

तो, मैं यहां यह कहना चाहता हूं कि हमें अपने भीतर की नकारात्मक ऊर्जाओं से भय से भागने, मारने, या बदलने की कोशिश बंद कर देनी चाहिए। इसके बजाय, हमें उन्हें जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करना चाहिए। मैं 2004 से यह कर रहा हूं। मेरे रास्ते में कई कठिन परिस्थितियां आईं हैं, लेकिन उन परिस्थितियों का अधिपति बनने या उनसे संबंधित ऊर्जाओं को विकसित करने में मदद करने से, किसी भी ऊर्जा ने मुझे नष्ट नहीं किया, बल्कि उन कठिन परिस्थितियों ने अपने आप पर विश्वास भी बढ़ाया है।

तो, यह सिर्फ सकारात्मकता की इच्छा करने, उसके लिए ध्यान करने और नई ऊर्जा को आकर्षित करने के बारे में नहीं है, बल्कि हमारे भीतर पहले से मौजूद पुरानी ऊर्जाओं को बदलने के बारे में भी है। केवल तभी हम अद्भुत परिणाम देखेंगे। इसलिए, मैं सुझाव देता हूं कि आप किसी भी ऊर्जा को परिवर्तन करने का कला सीखें, चाहे वह अस्वस्थ ऊर्जा हो, मानसिक ऊर्जा हो या कोई अन्य ऊर्जा हो। यदि आप इस एक कला को सीखते हैं, तो आपका पूरा जीवन आपके नियंत्रण में आ जाएगा।

मैं यह अनुभवजन्य ज्ञान आपके साथ बांट रहा हूं क्योंकि कई लोगों ने इसका अभ्यास करके अद्भुत परिणाम प्राप्त किए हैं। मैं जो कहता हूं उस पर अंधविश्वास न करें, बल्कि अभ्यास के माध्यम से स्वयं अनुभव करें। प्रयास और दृढ़ संकल्प के साथ, आप कुछ भी हासिल कर

सकते हैं और अपनी किसी भी समस्या का समाधान स्वयं कर सकते हैं। छोटी समस्याओं से शुरू करें और धीरे-धीरे उनके कारण होने वाले दर्द को सहन करना सीखें। उन्हें स्वयं कम करें और अपने आप पर विश्वास बढ़ाएं। फिर, एक आनंदमय जीवन जीना शुरू करें।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**

पिघलजाओ

यदि आप अपने भाग: शरीर, मन और हृदय से परे जाकर आत्मा तक पहुंचना चाहते हैं, तो पहले यह पहचान लें कि, आप उनसे प्रभावित हैं और उनमें कैद होकर रह रहे हैं। उसके बाद अपना ध्यान अपने भागों से बदल के स्वयं पर लगाएँ, और फिर पिघलने का अभ्यास करें। जो कुछ भी होता है, इस प्रक्रिया में भाग लेने के बिना, आप अंदर जप करें कि, "केवल मैं पिघल रहा हूँ", और बर्फ के घन की तरह पिघल कर शुद्ध हो जाओ। इसके बाद अंदर फैल जाओ। बिना बात के, बिना सोचे समझे, बिना कुछ करते हुए, केवल इस भावना में रहना है कि मैं पूरे शरीर में मौजूद हूं। फिर आप नींद की स्थिति में प्रवेश करेंगे, या अपने भागों से बाहर आकर खाली जगह में रहेंगे। इस स्थिति में यदि आप कुछ समय के लिए रह सकते हैं, तो विचार अपने आप ही पिघल जाते हैं और मौन अंदर रहेगा, और उसके बाद आत्मा प्रकट होगा। तब आप सुखदता, हल्कापन, ताजगी और आनंद का अनुभव करेंगे। अपनी आँखें तुरंत खोले बिना, इस आनंद को अपने सभी भागों में फैलाएँ। तब आपको सभी समस्याओं का समाधान मिल जाएगा। साथ ही आपके सभी भागों के बीच समन्वय होगा। इस ध्यान का अभ्यास कोई भी, कभी भी, कहीं भी, और बिना समय सीमा के, किया जा सकता है। इस ध्यान को रोजाना कम से कम 10 मिनट तक अभ्यास करें।

दान

न्यूएनर्जी-अद्वैत ज्ञान से प्रेरित कोई व्यक्ति या कोई भी, दान करना चाहता है, तो कृपया निम्नलिखित बैंक खाते में पैसा जमा करें। आपकी मदद हमें इस ज्ञान को बहुत सारे लोगों तक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। Name: P.Sreedhar; SBI Bank A/c No: 30603897922. Branch: Hanamkonda; City: Hanamkonda, Warangal District, India. IFSC Code: SBIN0003422 Mobile No: 9390151912. आपकी उदारता और समर्थन की सराहना की जाती है! This mobile No. also has GooglePay and PhonePe.